सामुद्रिक शक्ति की अवधारणा

11.

एल्फ्रेड थेयर महान : अमेरिका

भूमिका

ए.टी. महान संसार के अत्यन्त ही विख्यात 'नौ सैनिक शक्ति के प्रभाव" के सिद्धान्त की अवधारणा का जन्मदाता था। इसका जन्म 1840 ई. में अमेरिका में हुआ था। महान् ने 19 वर्ष की आयु में अमेरिका के NAVAL ACADEMY से कमीशन प्राप्त किया, चूँकि इनके पिता अमेरिकी सैनिक प्रशिक्षण संस्थान [WEST POINT] में इतिहास के प्रोफेसर थे। इसलिए महान की विचारधारा पर परिवार के वातावरण का अधिक प्रभाव पड़ा। 1867 में महान को सुदूर पूर्व के क्षेत्र में विभिन्न कार्रवाइयों के बीच भेजा गया और तभी से उसने सैनिक इतिहास का गहन अध्ययन प्रारम्भ किया। 1884 में उसकी नियुक्ति "NAVAL WAR COLLEGE" में नौ सैनिक इतिहास के प्रवक्ता के रूप में हुई। 1890 तक महान ने उस समय के सैन्य चिन्तकों के मध्य एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया। इन्हीं दिनों उसने अपनी विख्यात पुस्तक "INFLUNECE OF SEA POWER UPON HISTORY" को लिखा। यह कहना उचित नहीं है कि महान को सफलता केवल सौभाग्य के फलस्वरूप हुई बल्कि यह कहा जाता है कि महान विशेष रूप से नौ-सैनिक शक्ति के क्षेत्र के महत्त्व को समझने और उसके बाद आवश्यक कार्रवाई करने के लिए योजना बनाने के सन्दर्भ में पर्याप्त चिन्तन करने के उपरान्त अपना शोध प्रारम्भ किया था। वह इस तथ्य से पूर्णतया सहमत था कि इतिहास के विभिन्न चरणों में सामुद्रिक शक्ति एक अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी और इसलिए उसका कहना था कि सामुद्रिक शक्ति के विकास में विभिन्न राष्ट्रों को क्रमशः सक्रिय होना चाहिए।

मुख्य रूप से महान की नौ सैनिक शक्ति की विचारधारा को अमेरिका की सैनिक सुरक्षा की समस्याओं से प्रेरणा प्राप्त हुई और दूरदर्शी सैनिक चिन्तक ऐसा विश्वास करते थे कि 20 वीं शताब्दी में अमेरिकी राष्ट्र के प्रभुत्व को स्थपित करने के लिए और सम्पूर्ण विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए उच्च स्तरीय नौ सेना का गठन अत्यन्त ही आवश्यक होगा। आज जब हम बीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय के महान् जैसे भविष्य-वक्ता ने नौ-सैनिक शक्ति के सन्दर्भ में जो कुछ कहा था। वे अक्षरशः सत्य हैं। यह कहना उचित नहीं है कि महान ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए किसी नयी अवधारणा को जन्म दिया, बल्कि नौ सैनिक शक्ति के महत्त्व को उस समय के पहले के भी किसी सैनिक या असैनिक नेता ने स्वीकार करने से इन्कार नहीं किया था। परन्तु सर्व प्रथम महान ने ही अपने विचारों को व्यक्त करते हुए नौ सैनिक शक्ति की अवधारणा को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि सभी सैनिक और असैनिक नेता प्रभावित होकर नौ सैनिक प्रगति के लिए आवश्यक कार्रवाई कर सके। हाँ, यह अवश्य कहा जा सकता है कि महान ने नौ सैनिक शक्ति के महत्त्व को बढ़ाने में विशेष योगदान किया।

महान् ने विभिन्न नौ सैनिक संग्रामों की विवेचना बड़ी तार्किकता के साथ की और उसकी व्याख्या में ही उसके विचारों का मूल सार निहित था। महान ने उस समय की राजनीतिक, राजनयिक और सैनिक इतिहास की परिस्थितियों को समझते हुए विभिन्न तानों-बानों को जोड़ने का प्रयास किया और उसने यह भी स्पष्ट

Scanned by CamScanner

करने का प्रयास किया कि इन सभी सम्बन्धित क्षेत्रों की समस्याओं का प्रभाव सामुद्रिक शक्ति पर किस प्रकार पड़ता है ? इसलिए कहा जाता है कि महान् ने सामुद्रिक शक्ति के दर्शन को एक नये स्तर तक पहुँचाने का प्रयास किया और जिसके फलस्वरूप उन्हें सामुद्रिक शक्ति के लिए स्त्रातेजी एवं समरतन्त्र के नियमों को निर्धारित करने में सफलता प्राप्त हुई। इतिहास का गहन अध्ययन करने के उपरान्त उसने तर्कों को प्रस्तुत किया और कहा कि "किसी भी राष्ट्र की प्रगति तथा उसकी शक्ति वर्धन की क्रिया में सामुद्रिक शक्ति अत्यधिक सहायक सिद्ध होती है।" विभिन्न परिस्थितियों को समझने के उपरान्त उसका ऐसा विचार था कि स्थल व्यापार के साधनों की तुलना में सामुद्रिक व्यापार के साधन अधिक लाभदायक होते हैं। समुद्रों और नदियों के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर रसद सामग्री ले जाने की क्रियाओं में और साथ साथ सामुद्रिक व्यापार में संलग्न होना लगभग अनिवार्य था, क्योंकि सड़कें बहुत सीमित थीं और उनका समुचित विकास नहीं किया जा सका था। सामुद्रिक व्यापार में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। बड़ी तादाद में लुटेरे सामुद्रिक व्यापार करने वाले व्यापारियों का अपहरण करके और उनके व्यापारिक बेड़े को कब्जे में करके अन्तर राज्यीय व्यापार के लिए बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न कर देते थे। फिर भी ये सामुद्रिक लुटेरे स्थल की तुलना में सामुद्रिक क्षेत्रों में बहुत अधिक सफल नहीं हो पाते थे। आज हम निष्कर्ष पर पहुँच चुके हैं कि किसी भी देश के लिए जिसके पास सामुद्रिक सुविधाएँ हैं, अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करने के लिए सामुद्रिक व्यापार में संलग्न होना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में उसके सामुद्रिक बेड़े की सुरक्षा लिए उच्च स्तरीय नौ सेना का होना अत्यधिक आवश्यक है। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए सामुद्रिक शक्ति के विकास के लिए महान ने कुछ मुख्य नियमों को प्रतिपादन किया, जिनका सामरिक दृष्टि से पालन अति आवश्यक प्रतीत होता है।

महान नौ सैनिक शक्ति का एक प्रतिभाशाली विचारक था। सामुद्रिक शक्ति एवं नौ सैनिक समरतंत्र के विकास में महान का योगदान अद्वितीय है। उसने अमेरिकी नौ सैनिक शक्ति के साथ-साथ ब्रितानी नौ सैनिक शक्ति के विकास को भी प्रेरित किया। महान के विचार इतने विकसित थे कि विलियम द्वितीय, फ्रांस, इटली, रूस, जापान तथा जर्मनी ने उसके सामुद्रिक शक्ति सम्बन्धी सिद्धान्तों का अनुकरण किया। जोमिनी की तरह महान ने भी नौ सैनिक युद्ध के निमित्त समरतंत्र और सामरिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया।

महान ने जिस समय अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया था। उस समय यातायात के साधन सीमित थे। सड़के खराब तथा कम थी। यदि विश्व के मानचित्र पर दृष्टिपात करें तो स्पष्ट होता है कि पृथ्वी का तीन चौथाई भाग जल से घिरा है। इसी कारण महान ने कहा कि यदि कोई राष्ट्र जल पर अपना सामान्य प्रभुत्व स्थापित कर ले तो वह महान शक्ति के रूप में उभर सकता है।

18वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति हुई जिसका प्रभाव समस्त क्षेत्रों पर पड़ा। उस समय औद्योगिक एवं तकनीकी दृष्टि से विकसित राष्ट्र जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस, बेल्जियम आदि ने अपने सामानों के निर्यात के लिए सामुद्रिक मार्ग को चुना, जिसके कारण अन्य देशों के साथ उनके राजनीतिक सम्बन्ध सुदृढ़ हुए। आगे चलकर निर्मित वस्तुओं की मांग और बढ़ी। जिनकी पूर्ति के लिए बड़े जहाजों की आवश्यकता पड़ी, साथ ही साथ उसकी सुरक्षा भी अनिवार्य हो गयी। महान ने बताया कि सामुद्रिक शक्ति से ही विकसित राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति और सुदृढ़ हो सकती है। महान के विचारों ने सबसे पहले ब्रिटेन को प्रभावित किया, जिसके सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि "ब्रिटेन सामुद्रिक लहरों पर राज्य करता है।"

महान ने कहा था कि "सामुद्रिक क्षेत्र पर प्रभुत्व स्थापित करना एक ऐतिहासिक आवश्यकता है।" परन्तु किसी भी चिन्तक या विचारक ने सामुद्रिक शक्ति सम्बन्धी सिद्धान्तों तथा नौ सैनिक समरतंत्र को इतना अधिक प्रभावित नहीं किया, जितना कि महान ने किया। ब्रिटेन और अमेरिका को सामुद्रिक शक्ति के रूप में स्थापित करने में महान की धारणा की प्रभावशाली भूमिका थी। ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका ऐसे देश है जिनके पास ऐसी कोई स्थल सीमा नहीं है जिसकी वे रक्षा कर सकें। अतः उनकी विशाल नौ सेना की स्थापना कर अपनी सुरक्षा पर ध्यान केन्द्रित करें। महान के विचारों ने जर्मनी की नौ सेना के विकास में भी प्रेरक का कार्य किया। उसके विचारों ने फ्रांस, इटली, रूस और अन्य छोटी-छोटी सामुद्रिक शक्तियों को भी प्रभावित किया। महान के अनुसार नौ सैनिक समरतंत्र तथा सामुद्रिक शक्ति का स्वरूप कुछ आधारभूत प्राकृतिक तत्त्वों, राष्ट्रीयनीति एवं नौ सैनिक अड्डों की क्षमता एवं आवश्यकता पर निर्भर करता है। महान के

Scanned by CamScanner

अनुसार, "समय के साथ-साथ सामरिकी परिवर्तनशील है जबकि नौ सैनिक समरतंत्र अपरिवर्तनशील है" महान ने सामुद्रिक शक्ति की अवधारणा के अन्तर्गत छः आधार भूत तत्त्वों का उल्लेख किया है। जो निम्न है–

भौगोलिक स्थिति, क्षेत्रीय विस्तार, भौतिक बनावट, जनसंख्या, राष्ट्रीय चरित्र एवं शासन का स्वरूप इत्यादि।

भौगोलिक स्थिति

महान ने सामुद्रिक शक्ति के आधारभूत तत्त्वों में भौगोलिक स्थिति का वर्णन करते हुए बताया कि यदि किसी देश की भौगोलिक स्थिति ऐसी हो कि वह स्थल के अधिकांश भाग को समुद्र से घिरा हुआ पाता है। तो उसके लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह अपने देश की सुरक्षा तथा आस-पास के सामुद्रिक व्यापार वाले क्षेत्र पर अपना आधिपत्य स्थापित करें। उसने अपनी पुस्तक में कहा है कि "भौगोलिक स्थिति के कारण ब्रिटेन ने विभिन्न सामुद्रिक व्यापारिक मार्गों पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर रखा है।" भौगोलिक स्थिति के कारण ही फ्रांस एवं हालैण्ड के मुकाबले ब्रिटिश सेना अधिक महत्त्वपूर्ण थी। किसी भी देश की भौगोलिक स्थिति उस देश की सेना को एक सहायक का रूप प्रदान करती है तथा युद्ध नीति की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है। भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाकर शत्रु के विरुद्ध आक्रमणात्मक एवं सुरक्षात्मक कार्यवाही की जा सकती है। महान का कथन है कि किसी भी देश का भू-समरतंत्र राजनीतिक दृष्टि से ऐसा होना चाहिए कि वह अपनी नौ सेना के माध्यम से शत्रु की नौ सेना को नष्ट कर सकें। यदि कोई देश के किसी क्षेत्रों पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेता है तो वह बड़ी आसानी से शत्रु के यातायात के साधनों को अपनी सैनिक कार्यवाहियों का लक्ष्य बना सकता है तथा अपनी स्थिति को सुदृढ़ कर सकता है। महान ने बताया कि जिस क्षेत्र में जो देश अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेता है। वह वहां से गुजरने वाले जहाजों से कर वसूल करता है। जैसे–हालैण्ड, स्वीडन, डेनमार्क, रूस और जर्मनी सभी के जहाज इंग्लिश चैनेल से होकर गुजरते थे, ब्रिटेन का इंग्लिश चैनेल पर प्रभुत्व था, जिसके परिणामस्वरूप वह इन देशों के व्यापारिक बेड़ों से कर वसूल करता था। इस व्यापारिक यातायात के फलस्वरूप ब्रिटेन का प्रभुत्व उत्तरी क्षेत्र में स्थापित हो गया। इस प्रभुत्व के कारण ही ब्रिटेन एशियाई क्षेत्रों में अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सफल हो सका। ऐतिहासिक अध्ययन पर स्पष्ट करता है कि भू-मध्य सागर की भौगोलिक स्थिति ने ही ब्रिटेन को दोनों महायुद्धों में एक आवश्यक स्थान प्रदान किया।

इसी प्रकार आज हिन्द महासागर एशियाई राजनीति का महत्त्वपूर्ण केन्द्र बना हुआ है। आज संसार की बड़ी-बड़ी शक्तियां इसके सभी मार्गों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का यत्न कर रही है तथा साथ-साथ विभिन्न देशों में बन्दरगाहों एवं सैनिक अड्डों का निर्माण करना चाहती हैं। भारत के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि उसका बहुत बड़ा भाग इस समुद्र से लगा है, पश्चिम में अफ्रीका, पूर्व में वर्मा, मलेशिया, यदि भारत चाहे तो वह अपनी भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाकर सबसे बड़ी नौ सैनिक शक्ति बन सकता है।

क्षेत्रीय विस्तार

महान ने बताया "जब कभी समुद्र किसी देश को दो या उससे अधिक भागों में विभक्त करें तो उस देश के लिए यह आवश्यक है कि वह नौ सेना द्वारा अपना प्रभुत्व स्थापित करें। ऐसी परिस्थिति में वह देश या तो सामुद्रिक शक्ति के द्वारा अपने क्षेत्र का विस्तार करता है या अपने को कमजोर मानकर अपने को सीमित रखता है। इस संदर्भ में महान का कथन है कि किसी देश की सामुद्रिक सीमा बहुत विस्तृत हो तो उसकी यह लाभ की स्थिति होगी कि उसे विभिन्न क्षेत्रों में व्यापारिक एवं नौ सैनिक कार्यवाही करने के लिए सुविधा प्राप्त होगी। महान ने बताया कि यदि सीमा बहुत अधिक विस्तृत हो तो उस देश को चाहिए कि वह नौ सैनिक शक्ति के विकास एवं व्यापारिक विकास के लिए अलग से मन्त्रालय बनाये।

इसी कारण आज कल विभिन्न राष्ट्र अपनी नौ सैनिक बेड़ों तथा व्यापारिक बेड़ों की मरम्मत हेतु व्यापक सुविधायें विकसित करने का प्रयास करते हैं। साथ ही साथ विभिन्न समुद्र तटीय क्षेत्रों को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टि से ऐसी परिस्थिति में रखना चाहते हैं जिससे कि वहाँ की जनता में किसी प्रकार का असन्तोष न उत्पन्न हो। इसी प्रकार महान का यह भी मानना था कि किसी भी देश की आन्तरिक सम्पन्नता एवं दुर्बलता उस देश के सामुद्रिक क्षेत्र विस्तार पर निर्भर करती है। जिस देश का विस्तृत क्षेत्र अनेक नदियों

Scanned by CamScanner

के कारण कटा फटा होता है और जिसकी जनसंख्या अनुपात में कम होती है तो उस देश में नौ सैनिक शक्ति का विकास सरल नहीं होता है। यदि किसी राष्ट्र की भौगोलिक और भौतिक बनावट अन्य राष्ट्र के सन्दर्भ में एक समान होती है उस राष्ट्र का नौ सैनिक विकास क्षेत्रीय विस्तार पर निर्भर करता है।

भौतिक बनावट

भौतिक बनावट का उल्लेख करते हुए महान लिखता है कि यदि समुद्रतटीय रेखा सुगम हो तो कई प्राकृतिक बन्दरगाह उपलब्ध होते हैं, जिससे समुद्री उत्पादों को एकत्र करने में सुविधा तथा भरण-पोषण की समस्या स्त्रातेजिक रूप से हल करने में सहायता मिलती है। इस प्रकार उस क्षेत्र की जनता सामुद्रिक सम्पदा का प्रयोग करके अपने जीवन स्तर में सुधार करती है तथा राष्ट्रीय विकास में अपना सुदृढ़ योगदान करती है। जैसे हालैण्ड निवासी अपनी भौतिक बनावट के फलस्वरूप सामुद्रिक सम्पदा का भरपूर उपयोग करते हैं। जबकि फ्रांस के विभिन्न तटों पर निवास करने वाली जनता ऐसा नहीं करती, क्योंकि उस क्षेत्र के आस-पास की भूमि उपजाऊ होने के कारण खेती के काम आती है तथा बहुसंख्यक तटीय जनता कृषि के व्यवसाय में लगी है। किसी भी राष्ट्र के समुद्री व्यापार को सुचारू रूप से चलाने के लिए उपर्युक्त स्थानों पर सुसज्जित बन्दरगाहों की आवश्यकता होती है। यदि राष्ट्र के पास उच्च स्तरीय व्यापारिक बेड़ा नहीं है तो अत्यन्त ही सुसज्जित तथा सुसंगठित नौ सेना की तार्किकता स्पष्ट नहीं होती है। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुये विभिन्न राष्ट्र गहरें पोताश्रयों का निर्माण करते हैं जो युद्ध तथा शान्ति के समय विभिन्न गतिविधियों में उपयोगी होते हैं।

जनसंख्या

किसी भी राष्ट्र की जनसंख्या तथा उसकी अभिरूचि का प्रभाव सैनिक नीतियों पर पड़ता है। यदि जनता का एक बड़ा हिस्सा समुद्रतटीय क्षेत्रों में रहता है तथा सामुद्रिक व्यापार एवं नौ सैनिक गतिविधियों में हिस्सा लेता है तो उस राष्ट्र की स्थिति चाहे वह शांति का युग हो या युद्ध का समय पर्याप्त मात्रा में सुरक्षित रहती है। सामुद्रिक शक्ति को बढ़ाने के लिए जनता का एक बड़ा हिस्सा व्यापार में संलग्न होना चाहिए और जिन राष्ट्रों में ऐसा होता है वहाँ पर नौ सैनिक शक्ति का विकास करने में आसानी होती है। ब्रितानी नौ सेना के विकास में उनके व्यापारिक सामुद्रिक बेड़े ने महत्त्वपूर्ण सहायता प्रदान की थी। जब शांति के समय कोई राष्ट्र सामुद्रिक व्यापार को बढ़ाने के लिए उपयुक्त व्यापारिक जलपोतों के निर्माण में संलग्न रहता है तो युद्ध के समय आवश्यकतानुसार उन जलपोतों की रूप रेखा में आवश्यक परिवर्तन करके उसे युद्ध के लिये उपयुक्त भी बनाया जा सकता है। यद्यपि आज कल व्यापारिक और युद्धक जलपोतों की रूपरेखा में बहुत अन्तर पाया जाता है। फिर भी आवश्यकतानुसार व्यापारिक जलपोतों के निर्माण में संलग्न इन्जिनियरों का उपयोग सैनिक पोतों के निर्माण में किया जा सकता है।

राष्ट्रीय चरित्र

महान के अनुसार यदि राष्ट्रीय नेताओं के हृदय में सामुद्रिक व्यापार में हिस्सा लेने की इच्छा होती है तो वे अपने यहाँ उत्पन्न कच्चे माल को दूसरे राष्ट्रों को भेजने के लिए जब समुद्री मार्ग का उपयोग करते हैं तथा आन्तरिक व्यापार में भी संलग्न होने का प्रयत्न करते हैं तो इस प्रक्रिया में भाग लेने वाली जनता राष्ट्रीयता की उच्च भावना से प्रेरित होकर विभिन्न प्रकार सामुद्रिक गतिविधियों में भाग लेती है नौ सैनिक उस राष्ट्र की व्यापारिक एवं तब क्षमता निश्चय ही दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती है। यदि इन्हीं क्षेत्रों की जनता विभिन्न उत्पादों को चोरी छिपे दूसरे राष्ट्रों को बेचती है तो उससे राष्ट्र की व्यापारिक और नौ सैनिक क्षमता ही नहीं घटती बल्कि राष्ट्र की अर्थव्यवस्था पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए विभिन्न तटीय क्षेत्रों की जनता को समुद्रिक व्यापार से संलग्न करने में उस राष्ट्र की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

शासन का स्वरूप

राजनीतिक नेताओं के लिए यह देखना आवश्यक हो जाता है कि समुद्रतटीय जनता के बीच किसी भी प्रकार का असंतोष न उत्पन्न हो और साथ ही साथ वे राष्ट्रीय हित के प्रति जागरूक हों, परन्तु महान का ये मानना था कि ऐसा तभी सम्भव हो सकता है जब शासन का स्वरूप ऐसा हो कि वह राष्ट्रीय हितों को

Scanned by CamScanner

ध्यान में रखते हुए सामुद्रिक शक्ति के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकें। यदि शासन विवेकपूर्ण नीति को नहीं अपनाता और जनता का ध्यान सामुद्रिक व्यापार और नौ सेना की ओर नहीं आकृष्ट पाता और कर भी लेता है तो उसे आवश्यकतानुसार प्रोत्साहित नहीं कर पाता है तो स्वाभाविक रूप से सामुद्रिक शक्ति का विकास नहीं हो पाता है। इतिहास के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि फ्रांस और ब्रिटेन की नौ सेना केवल इसलिये शक्तिशाली बन गई थी क्योंकि उसके नेता सामुद्रिक शक्ति से सम्बन्धित अपने हितों को सुरक्षित रखना चाहते थे। महान ने सामुद्रिक शक्ति की उन्नति के लिए सुरक्षित ठिकानों तथा नौ सैनिक अड्डों की व्यवस्था को भी अत्यन्त आवश्यक बताया था। इसलिए उसने सामुद्रिक मार्गों को जैसे जिब्राल्टर, माल्टा, मारीशस आदि में नौ सैनिक अड्डे स्थापित करने की परामर्श दी। ब्रितानी शासकों ने इस बात को ध्यान में रखते हुए महासागरों में अनेक स्त्रातेजिक ठिकानों पर नौ सैनिक चौकियां स्थापित की थी। यूरोप तथा अमेरिका में नौ सैनिक शक्ति को बढ़ावा देने का श्रेय एडमिरल महान को है क्योंकि महान ने इतिहास की व्याख्या करते हुए, भू-स्त्रातेजी एवं भू-संरचना को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय हितों के संदर्भ में नौ सैनिक नीतियों के निर्माण पर जोर दिया है।

नौ सैनिक शक्ति के विकास के अन्तिम तत्त्व के रूप में नौ सेना में सैनिकों के उच्च स्तरीय प्रशिक्षण पर प्रकाश डाला है। ऐसे सभी राष्ट्र जिनके लिये नौ सैनिक शक्ति का निर्माण करना अति आवश्यक है, उच्च स्तरीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना करनी चाहिए, जहां पर नौ सैनिक समरतंत्र का उच्च स्तरीय प्रशिक्षण दिया जा सकें। इसके अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय तकनीकी विकास को दृष्टिगत रखते युद्धपोतों एवं जलपोतों के निर्माण में संलग्न इंजीनियरों को उचित शिक्षा दी जा सकें। क्योंकि बहुत से राष्ट्रों में पोतों के निर्माण की रूपरेखा तथा तकनीकी ज्ञान का अभाव होता है। ऐसे राष्ट्रों को विदेशों में प्रशिक्षण प्राप्त स्वदेशी इंजीनियरों को उपर्युक्त सुविधा प्रदान करनी चाहिए। प्रशिक्षण संस्थानों में भविष्य में नौ सैनिक समरतंत्र के विकास पर चिन्तन भी किया जाना चाहिए। महान ने अपने चिन्तन में नौ सैनिक शक्ति के विकास में आर्थिक तत्व की भूमिका का उल्लेख नहीं किया है, जबकि नौ सैनिक शक्ति के विकास के इतिहास और वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखते हुए यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि पूँजी और तकनीकी के अभाव में नौ सैनिक शक्ति का विकास तो दूर की बात है, एक पात या नाव का निर्माण भी सम्भव नहीं हो सकता है। यदि पूँजी और तकनीकि होतो प्राकृतिकी और भौगोलिक परिस्थितियों के प्रतिकूल होने के बावजूद भी नौ सैनिक शक्ति का निर्माण और विकास किया जा सकता है।

सामुद्रिक शक्ति के महाद्वीपीय सिद्धान्त

अमेरिका और ब्रिटेन दोनों की नौ सेनाओं ने एडमिरल ए. टी. महान द्वारा प्रतिपादित सामुद्रिक शक्ति के सिद्धान्त सम्बन्धी धारणा को स्वीकार किया। इतना ही महान के सामुद्रिक शक्ति सम्बन्धी सिद्धान्त का जर्मनी के नौ सैनिक सिद्धान्त पर भी व्यापक प्रभाव पड़ा तथा इस प्रकार सामुद्रिक शक्ति के महाद्वीपीय सिद्धान्तों के अनेक स्कूलों का जन्म हुआ। यद्यपि महाद्वीपीय सामुद्रिक शक्ति के विचारक सामान्यतया महान के चिन्तन के प्रति अपनी सहमति व्यक्त करते हैं। फिर भी उल्लेखनीय तथ्य यह है कि महान ने उनकी महत्वपूर्ण सामुद्रिक शक्ति सम्बन्धी समस्याओं महान ने बहुत ही कम लिखा है। अर्थात् एक दुर्बल और कम संख्या वाले युद्धपोतों की सहायता से कैसे ब्रिटीश सामुद्रिक शक्ति को पराजित किया जा सकता है ? वास्तव में महान के चिन्तन इन विभिन्न महाद्वीपीय शक्ति के विचारकों की धारा की नींव डाल दी। जैसे 1880 के दशक के प्रारम्भ फ्रांसीसी नौ सेना के ज्यूने इकोले (Jeune Ecole) ने नौ सैनिक स्त्रातेजी पर चिन्तन के लिए एक स्कूल की स्थापना की। इकोले की रूचि केवल व्यापार एवं वाणिज्य को नष्ट करना। इसके लिए अनेक युद्ध लड़े गये परन्तु फ्रांसीसी सदैव ब्रिट्रीश सामुद्रिक शक्ति के विरुद्ध असफल ही रहे, 18वीं शताब्दी में क्रान्तिकारी जन सेना के जन्म के बावजूद भी। इकोले के आधारभूत सिद्धान्तों का जन्म 1852 से 1871 मध्य हुए युद्धों से ही हुआ, जिसमें औद्योगिक क्रान्ति के काल के आयुधों का पहली बार प्रयोग किया गया। 1870-71 में प्रशा के विरुद्ध युद्धों में फ्रांसीसी सेनायें ऐसे राज्य से पराजित हो गई, जिसके पास सम्भवतः अपनी रक्षा के लिए भी छोटी नौ सेना भी नहीं थी। विशेष रूप से फ्रांस और जर्मनी में परम्परागत के अन्तर्गत सेना का पैदल सेना और सामुद्रिक शक्ति का अर्थ व्यापार-वाणिज्य और उपनिवेशों की स्थापना से समझा जाता था। इसी कारण यूरोपीय राज्यों के सम्बन्धों के निर्धारण में इन राज्यों की भूमिका सदैव द्वितीयक ही

Scanned by CamScanner

रही। सेडन के युद्ध के बाद पेरिस के किले में एक नौ-सैनिक अधिकारी और नौ सैनिक अध्यादेश जारी किया गया। फिर भी नौ सेना पराजय को कुछ देर तक टालने सफल रही, परन्तु फ्रांसीसी नौ सेना जर्मनी के समुद्रतट की नाकेबन्दी पूरी तरह विफल रही। इसके साथ सभी युद्धों फैसला थल शक्ति द्वारा ही हो गया और पराजय या विजय दोनों में नौ सेना की भूमिका नगण्य ही रही थी। अमेरिकी गृह युद्ध तथा जर्मनी के एकीकरण के युद्धों में रेल मार्गों एवं प्रागलियों द्वारा आरक्षित सैनिकों को युद्ध क्षेत्र तक पहुंचाने में सफल रहे और शत्रु को पराजित करने में सफल हुए।

जर्मनी के एकीकरण में 1866 से 1870 तक के युद्धों यूरोपीय सैन्य चिन्तन में थल सेना बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण समझा जाता था तथा सामुद्रिक शक्ति पर बहुत कम ध्यान दिया जाता था। परिणाम स्वरूप नौ सेना और सामुद्रिक शक्ति को महाद्विपीय स्त्रातेजी में दत्तक पुत्र (सौतेला) का ही स्थान प्रदान किया गया। इसी कारण फ्रांस और जर्मनी में नौ सैनिक शक्ति के प्रति उदासीनता बनी रही। इस व्याख्या से ज्यूने एकोले सहमत है। वह अच्छी तरह समझता था कि पराजित फ्रांस ब्रिटेन की तरह बड़ी नौ सैनिक शक्ति निर्माण नहीं कर सकता था तथा जर्मनी के विरुद्ध प्रतिकार युद्ध जमीन पर ही लड़ा जायेगा, समुद्र पर नहीं। कुछ फ्रांसीसी चिन्तकों का ऐसा मानना था कि त्रिपक्षी गठबन्धन की सहायता से इटली से होकर थल सेना और नौ सेना द्वारा आक्रमण किया जा सकता परन्तु इस धारणा को 1880 या 1939 में कोई समर्थन या सहयोग नहीं मिल सका। परम्परागत तरीके से की गई नाकेबन्दी लगभग असम्भव थी। छोटी अवधि के युद्धों में फ्रांस या जर्मनी की सैनिक शक्ति या युद्ध के परिणाम पर नाकेबन्दी का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि छोटी समुद्री मुहिम जैसे–क्रीमिया युद्ध में केवल 60 हजार सैनिकों ले जाया जा सका था। व्यावहारिक दृष्टि से विचार किया जाय तो हम कह सकते हैं कि उन्नींसवीं शताब्दी के मध्य तक की सभी नौ सैनिक संक्रियाएं तटवर्ती क्षेत्रों तक ही सीमित रहीं। इस काल के सभी सामुद्रिक शक्ति सम्बन्धी चिन्तक नौ सेनिक बेड़ों के सामूहिक प्रयोग एवं महत्व को भुला चुके थे। 1880 के दशक के दौरान जर्मनी ने छोटे नौ सैनिक बेड़ों का प्रयोग अपने समुद्री तटों की रक्षा के लिए करते थे। फिल्ड मार्शल सर हेनरी विल्सन ब्रिटेन की विशाल नौ सेना के अनुपयोगिता सम्बन्धी विचारों के कारण सदैव चर्चा में बने रहे। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी और ब्रिटेन एवं फ्रांस की संयुक्त सेना के विरुद्ध पश्चिमी मोर्चे पर जो खाई युद्ध लड़ा गया उसकी सफलता एवं विफलता में नौ सेना कोई विशेष योगदान नहीं था। तथा युद्ध का परिणाम थल सेना (कवचित) और वायुसेना के सहयोग से प्राप्त हुआ। सर हेनरी विल्सन अपने काल की महाद्वीपीय सैन्य विचारधारा के विरोधी थे।

उपरोक्त सामान्य धारणाओं और निष्कर्षों को 1860 के दशक तक युद्धों तक सत्य प्रतीत होती है, परन्तु इसके जर्मनी की तीव्रगति वाली यू बोट (U. Boat) का काल आया जो कालान्तर में विध्वंस पोत के रूप में जाने जाते थे। यह एक ऐसा विध्वंसक साधन था जो कि महाद्वीपीय आर्थिक नौ सैनिक शक्ति की समस्या सरल उत्तर था। जल्दी ही इसे सामुद्रिक तटों की रक्षा का गतिशील आयुध प्राप्त हो गया। तारपीडो नौकाओं ने फ्रांसीसी चिन्तकों की पूरी एक पीढ़ी की चली आ रही सोच को बदल दिया। ज्यूने इकोले, एडमिरल थियो फाइल अबे (Theophile Aube) ने इसे अपने नौ सैनिक सिद्धान्त आधारभूत तत्व बताया। उसके विशिष्ट सामरिक सुझाव भी महान की तरह अपरिपक्व थे, परन्तु फिर भी उसके कार्य और शब्दों ने बड़ी संख्या स्त्रातेजिक चिन्तकों को अपनी ओर आकृष्ट किया। तारपीडो नौकाओं की पराकाष्ठा के काल ने जम्रन, आस्ट्रिया-हंगरी और रूस को अपने युद्ध पोतों के निर्माण को योजनाओं को स्थगित कर दिया। जबकि ब्रिटिश चिन्तकों संसद के सम्मुख क्षमा याचना की और निर्माणाधीन पोतों के शेष कार्य को स्थगित कर दिया।

जैसे ही हम जब शान्तिकाल की सामुद्रिक गतिविधियों पर दृष्टिपात करते हैं, तो पाते हैं कि तारपीडो नौकाओं की भूमिका तट रक्षा के रूप में दिखाई देती है। ज्यूने इकोले का मानना था कि तारपीड़ो नौकाओं का प्रयोग इटली या इंग्लैण्ड के तटवर्ती क्षेत्रों में निवास करने वाली जनता को आतंकित करने के लिए किया जा सकता है। अन्तरराष्ट्रीय विधि तथा सामुद्रिक विधि के नियमों का पूरी तरह उल्लंघन करके आक्रमणात्मक कार्रवाई की जा सकती है। इसी प्रकार विचार डूहेट ने वायु शक्ति की धारणा को प्रतिपादित करते समय अतिशयोक्तिपूर्ण परिकल्पना की थी। परन्तु फिर भी तारपीडो नौकाएं सबसे पहले कम दूरी तक मार करने

Scanned by CamScanner

वाले आयुध थे, जिसने बड़े युद्धपोतों की सत्ता को चुनौती दी। फ्रांसीसियों एक विशेष प्रकार के टारपीडो नौका का निर्माण किया जो कोर्सिका और उत्तरी अफ्रीका के बीच प्रयोग करने के लिए थी। इसके साथ ही पश्चिमी भूमध्य सागर के तट दोनों किनारों पर आधुनिक नौ सैनिक अड्डे के निर्माण का कार्य प्रारम्भ हुआ।

इसी काल में इटली की नौ सैनिक चिन्तन भी अन्य राज्यों की ही तरह था। इटली के बड़े युद्ध पोतों का प्राथमिक अपने तट की रक्षा करना था। विशेष रूप से फ्रांसीसियों द्वारा की जाने वाली बमवर्षा या उसके किसी सैन्य मुहिम को रोका इटली तीव्र गति वाली हल्की कवचित, नौकायें फ्रांस के भारी युद्धपोतों पर पश्चिमी भूमध्य सागर में कभी नियन्त्रण नहीं कर सकती थी। भूमध्य सागर से दूर इटली ने कुछ स्थानों पर अपने नौ सैनिक केन्द्र स्थापित कर लिए थे और वे इस तथ्य को अच्छी तरह समझते थे कि यही एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें फ्रांसीसी प्रभुत्व को चुनौती दी जा सकती है।

1898 के बाद अमेरिका सम्पूर्ण विश्व से जुड़े हितों की महत्वाकांक्षा के बावजूद भी अमेरिकी नौ सेना की गतिविधियाँ अपने गोलार्द्ध की सुरक्षा पर ही केन्द्रित थी तथा दूसरी ओर जापान ने पूर्व एशिया महत्वपूर्ण क्षेत्रों एवं द्वीपों पर अपना नियन्त्रण स्थापित कर लिया।

ब्रिटेन की विश्वव्यापी सामुद्रिक शक्ति को उस प्रत्येक गतिविधि से खतरा उत्पन्न होता था, जब कोई बाहरी शक्ति किसी क्षेत्र को नियन्त्रित करने का प्रयास करती थी। इसके साथ ही रोचक तथ्य यह है कि ब्रिटेन सबसे बड़े सहयोगी अमेरिका, फ्रांस और जापान ही थे। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में रूस-जापान युद्ध के बाद कुछ फ्रांसीसी चिन्तक यह सोचने लगे कि यदि जापान का आक्रमण वियतनाम पर हुआ तो उसका सामना करने में कठिनाई उत्पन्न होगी। ठीक इसी समय ब्रिटेन हांगकांग को एक मजबूत नौ सैनिक शक्ति केन्द्र के रूप में विकसित करना शुरू कर दिया, जिससे पूर्वी एशिया में उत्पन्न किसी भी चुनौती का सामना किया जा सके।

उपरोक्त सभी धारणायें केवल रक्षात्मक स्त्रातेजी को सिद्ध करती है, न कि आक्रामणात्मक। फिर ब्रिटेन सामुद्रिक सर्वोच्चता को चुनौती देने वाले दूसरे अन्य कारक की विद्यमान थे, जो उसकी सामुद्रिक शक्ति और उपनिवेशों के लिए खतरा उत्पन्न कर सकते थे जिसका अभी भी विस्तार चल ही रहा था। इस सन्दर्भ में अनेक सैद्धान्तिक समाधान प्रस्तुत किये गये–

(1) 1840 के दशक में भाप की शक्ति से चलने वाले पोतों के निर्माण की वास्तविक तिथि से।

(2) फ्रांसीसियों का सपना था कि सभी और विलम्ब के बाद जिससे सदियों पुरानी सैन्य मुहिम की योजना का अन्त होगा।

(3) फ्रांसीसी सेना और शक्ति किसी भी शत्रु पर सामने से आक्रमण करेगा।

(4) भाप की शक्ति से चलने वाले पोतों को हवा की दिशा ज्वार-भाटा और पाल की आवश्यकता नहीं पड़ती थी तथा साथ ही ब्रिटिशर्स द्वारा निर्मित बन्दरगाहों पर रुकने के लिए बाध्य नहीं होना पड़ता था।

(5) 1840 से 1880 तक इसी विचारधारा के अनुरूप आवागमन संचालित होता रहा। परन्तु 1894 में जापान द्वारा चीन पर आक्रमण ने सामुद्रिक शक्ति महाद्वीपीय धारणा को पुनः सैन्य विशेषज्ञों के बीच चिन्तन का केन्द्र बिन्दु बना दिया। बोअन के युद्ध के समय फ्रांसीसी और जर्मन सैन्य अधिकारियों का यह प्रिय विषय-वस्तु बन गया। इसके साथ ब्रिटीश चैनेल पार दोनों तटों पर इस सम्बन्ध में चिन्तन चलता रहा।

फिर भी एडमिरल आबे अकेले ऐसे पदाधिकारी थे जो ब्रिटिश व्यापारिक एवं सामुद्रिक शक्ति के विरुद्ध जन सेना के उदय जैसी धारणा में विश्वास रखते थे। यद्यपि आबे के तर्क लुई 14वें शासन काल से पहले के थे। फिर भी उन्होंने सफलता प्राप्ति के दो उपायों का उल्लेख किया, जबकि पूर्ववर्ती समस्त प्रयास ब्रिटेन को पराजित या कमजोर करने सभी प्रयास विफल रहे। पहली बार अब ऐसा हुआ कि ब्रिटेन बाहर से आने वाले खाद्यान्न और खनिज पदार्थों की आपूर्ति निर्भर करने लगा। अमेरिकी गृह-युद्ध से स्पष्ट हो गया कि ब्रिटेन अब अपने नौ सैनिक अडडों तक पहुंचने से किसी को रोक सकने में समर्थ नहीं रहा। कुछ दूसरी अन्य विशेषताओं के साथ ये दो तत्व (खाद्यान्न एवं खनिज पदार्थ) आज की व्यापारिक-वाणित्यिक युद्धकला की विधियों से समान थी। ब्रिटेन पूरी तरह से समुद्र पार उपनिवेशों से प्राप्त संसाधनों पर निर्भर हो गया था तथा ब्रितानी नौ सेना को यह आदेश दिया गया था कि ब्रिटेन के द्वीप समूह पर प्रत्येक आने-जाने वाली

Scanned by CamScanner

नौकाओं एवं पोतों का गहन निरीक्षण किया जाय। रायल एअर फोर्स और सहायक के रूप में 8th यूनाइटेड स्टेट्स एअर फोर्स मिलकर यू बोट नौकाओं के अड्डों या उत्पादन केन्द्रों पर कड़ी नजर रखेंगे, जिससे इस गम्भीर समस्या का निदान किया जा सके।

1860 के दशक में कपास की फसल को बीमारी से भारी नुकसान पहुँचा तथा अनाज कानून को रद्द करना, इससे स्पष्ट होता है कि ब्रिटेन पूरी तरह से खनिज पदार्थ एवं अनाज के लिए वाह्य उपनिवेशों पर निर्भर हो गया था।

आबे के काल के समय तक यह अच्छी तरह समझ लिया गया था कि ब्रिटिश सत्ता का वास्तविक केन्द्र बिन्दु उसकी समुद्र पार से व्यापारिक एवं वाणिज्यिक आपूर्ति की रेखा है। इसी आपूर्ति रेखा की सुरक्षा ब्रिटेन की सबसे बड़ी चिन्ता थी। महान और टिप्ज (Tirpitz) दोनों समुद्र पार उपनिवेश एवं व्यापारिक केन्द्र स्थापित करने का सुझाव दिया। कोई भी चिन्तक ऐसा नहीं जिसने उपनिवेशों की स्थापना तथा समुद्र पार व्यापार की आपूर्ति रेखा को सुरक्षित रखने को सबसे महत्वपूर्ण समस्या न बताया हो। केवल ज्यूने अकोले एक मात्र ऐसे चिन्तक थे, जिन्होंने आत्म निर्भर राष्ट्र के स्वीकार किया और उसके पड़ोसी ब्रिटेन को आपूर्ति रेखा को बनाए रखने समस्या का सामना सदैव करना पड़ता था।

अमेरिकी गृह युद्ध के दौरान जहाजरानी तथा व्यापार एवं केन्द्रों भारी क्षति पहुँची। युद्ध के समय जहाजरानी तथा परिवहन को सुरक्षित रखने की गारन्टी सरकारें नहीं दे सकती थी। इसीलिए व्यापारिक पोतों संरक्षकों ने व्यापार के तटस्थ राष्ट्रों झण्डों का प्रयोग करना शुरू कर दिया था। ज्यूने इकोले सबसे मुख्य स्त्रातेजिक उद्देश्य ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था को अस्त-व्यस्त करना था। ज्यूने इकोले स्त्रातेजिक चिन्तन का आधार जोमिनी द्वारा प्रतिपादित जन सेना की अवधारणा थी। लगभग 20 वर्षों तक ज्यूने इकोले तटरक्षक एवं विध्वंसक पोतों के परस्पर तालमेल महाद्वीपीय नौ सैनिक सिद्धान्त के रूप स्थापित रहा। इकोले के चिन्तन का फ्रांस और अमेरिका सामुद्रिक शक्ति धारणा पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इतना ही नहीं रूस जैसा राष्ट्र जिसके पास गर्म जल का समुद्री तट तक नहीं था, ने भी ब्रिटीश सामुद्रिक परिवहन मार्गों की निरन्तर अध्ययन करता रहा तथा उसने अमेरिका और ब्रिटेन के पोतों की अपेक्षा तीव्रगति से चल सकता था, जिसमें रूरिक (Rurik) और रोसिया (Rossia) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

ज्यूने इकोले के सिद्धान्त के खण्डन के पीछे महान का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना था कि 1854 से 1870 के बीच के सीमित युद्धों के अनुभव पर आधारित था विश्व युद्ध की परिकल्पना पर नहीं। दूसरे अन्य विचारकों की तरह एक और महान लेखक था, जिसने अलग-अलग देशों में अलग-अलग काम किया। अमेरिका और जर्मनी में सामुद्रिक व्यापार और उपनिवेशवाद का सबसे बड़ा वक्ता व समर्थक था। क्लाजविट्ज और जोमिनी द्वारा प्रतिपादित युद्ध के सिद्धान्तों को फ्रांस में लागू करने का प्रयास किया जिन्हें इकोले ने पूरी तरह से भुला दिया था। उनका मूल उद्देश्य कमजोर पर आक्रमण और शक्तिशाली के विरुद्ध पलायन था। इसके परिणामस्वरूप सेना का मनोबल बहुत गिर गया था। दूसरी ओर महान ने डच नौ सेना के आक्रमणात्म और रक्षात्मक युद्ध कला सराहना की थी, क्योंकि कमजोर नौसैनिक शक्ति वाले राष्ट्र के लिए यही सबसे उत्तम नीति होती है। डच नौ सेना ब्रिट्रिश बेड़े की कभी अनदेखी नहीं की, फिर भी ये स्त्रातेजिक हितों की रक्षा के लिए इसके एक भाग के नष्ट हो जाने के लिए सतत् तैयार रहते थे। भाप शक्ति चलने वाले पोतों के कारण अब पूर्व नियोजित समय पर शत्रु के विरुद्ध आक्रमणात्मक कार्रवाई की जा सकती थी। इन सबके बावजूद भी महान ने स्वीकार किया है कि व्यापार एवं वाणिज्य को नष्ट करना नौ सेना का प्राथमिक कर्तव्य होता है। महान की धारणा के समर्थक यह उल्लेख करते हैं कि नौ सैनिक कार्रवाई स्थल सेना के आक्रमण को मजबूत बनाती और उसकी सहायक महान ने ऐतिहासिक दृष्टि से सिद्ध किया कि केवल वाणिज्य को नष्ट करना सदा सफल नहीं होता है, जैसा कि ज्यूने इकोले का मानना था। महान ने बताया कि अब परिस्थितियाँ काफी बदल चुकी हैं। महान ने स्पष्ट किया कि तकनीकी के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों के कारण सैनिक और नौ सैनिक स्त्रातेजी के मौलिक आयामों में परिवर्तन हो गया है।

विस्मार्क ने ब्रिटेन के विरुद्ध जो दबाव बनाया था, वह मूल रूप में कूटनीतिक था। कूटनीतिक प्रक्रिया को किसी भी चिन्तक ने अपने चिन्तन स्थान नहीं प्रदान किया था। 1880 में ब्रिटिश साम्राज्य की नौ सैनिक शक्ति प्रदर्शित करने तथा उसकी सर्वोच्चता को चुनौती देना कोई तकिया कलाम पढ़ना नहीं था। बल्कि इस

Scanned by CamScanner

और वायु शक्ति का भारी प्रयोग युद्ध के परिणाम नहीं प्राप्त कर सके। आधुनिक नौ सैनिक युद्ध कला की सफलता थल पर स्थित केन्द्रों की भूमिका नितान्त निर्णायक होती है। इसका स्पष्ट प्रमाण द्वितीय विश्व युद्ध के उपरान्त अनेक सैनिक गठबन्धनों को जन्म हुआ। इनमें सबसे सफल एवं प्रभावशाली गठबन्धन अमेरिका समर्थित नाटो संगठन है।

कासटेक्स अपनी रचना के प्रथम भाग में हिन्द-चीन (वियतनाम) को जपानी आक्रमण से बचा पाने की विफलता एवं असहाय स्थिति का विवरण दिया। इसी प्रकार सीरिया, मेडागास्कर एवं अन्य स्त्रातेजिक स्थानों पर नियन्त्रण के लिए आक्रमण की आशंका उत्पन्न हुई। सामुद्रिक अपने नियन्त्रण में आये स्थानों पर नियन्त्रण बनाये रखने अकेले सक्षम नहीं थी। यह उसकी सीमित शक्ति का द्योतक है। परमाणु प्रतिरोधकता को बनाये रखने के लिए परमाणु आयुधों से सुसज्जित पनडुब्बियों की भूमिका प्रथम प्रहार एवं द्वितीय प्रहार दोनों में अनुकूल परिणाम प्रदान करती है। इसीलिए अपनी सीमित क्षमता के बावजूद भी नौ सेना की अनुपस्थिति दूर स्थानों के लिए सम्पूर्ण सैन्य अभियान संचालित नहीं किया जा सकता है। क्योंकि समुद्र की सतह आज भी परिवहन-यातायात, व्यापार एवं वाणिज्य सबसे सस्ता, सुगम, रख-रखव की समस्या से मुक्त होने के कारण भविष्य स्त्रातेजिक समीकरणों को प्रभावित करता रहेगा।

यह तीनों UNO की शांति संबंधी अवधारणाएं हैं।

(3) निःशस्त्रीकरण–शस्त्रों पर नियंत्रण लगाना एवं उसमें कमी करना।

(4) अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय।

निष्कर्षतः संघर्ष उपशमन के लिए शांतिपूर्ण और बाध्यकारी दोनों ही उपायों का सहारा लिया जाता है। राष्ट्रों के मध्य विवादों के निदान, होने वाले गृहयुद्धों को रोकने, शांति बनाए रखने, शांति सृजन, शांति निर्माण और शांति परिरक्षण, शस्त्र-प्रतिस्पर्धा पर नियंत्रण और UNO की सुरक्षा परिषद द्वारा किए गए प्रयासों के बावजूद भी अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में अनेक ऐसी समस्याएं बनीं हुई हैं जिनका निदान अभी तक संभव नहीं हो सका है तथा अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय भी ऐसे समस्याओं के निदान में असहाय रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारणों से संघर्ष और विवाद की उत्पत्ति एक स्वाभाविक तथ्य हैं और जब तक राज्य राष्ट्रों का अस्तित्त्व बना रहेगा तब तक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में विवाद और संघर्ष भी बने रहेंगे और इसके निदान के लिए समानान्तर रूप से प्रयास भी किए जाते रहेंगे, क्योंकि राजनीति के लिए विवाद एक अपरिहार्य तत्त्व है जिसकी अनुपस्थिति में राजनीति संभव नहीं।

Scanned by CamScanner